मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • सलंग १६२ • जनवरी-२०२१

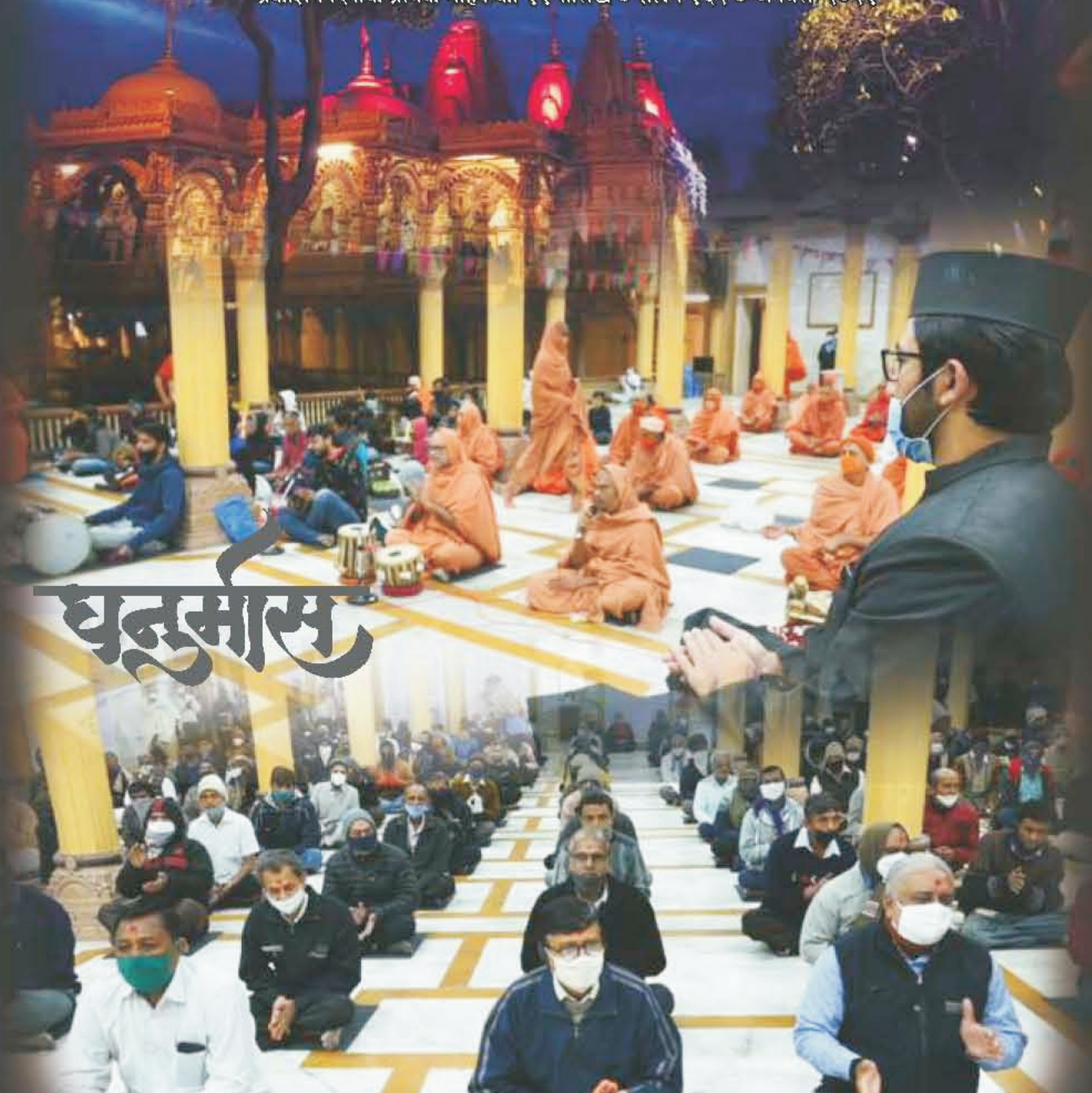

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) कालुपुर मंदिर में धनुर्मास के मध्य ठाकुरजी की आरती करते श्रीहरि के तीनो अपरस्वरुप ।(२ से ५) के क्रमानुंसार छपैया, जेतलपुर, मुली और नारणपुरा मंदिर में धनुर्मास की धून करते संत-हरिभक्त ।(६) कोटा श्री स्वामिनारायण विश्रांति भवन में शाकोत्सव ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १४ • अंक : १६२

जनवरी-२०२१

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युंजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ • फोक्स : २७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail: manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य प्रति वर्ष १०-०० • प्रति कॉपी १-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	दशावतार स्तोत्र	०६
०४.	मोर मुकुट	०८
०५.	श्रीकृष्णार्पण	१०
०६.	उत्तम संतान के लिये शास्त्र कथन	१३
०७.	सेवा-परमधर्म	१६
०८.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१७
०९.	सत्संग बालवाटिका	१९
१०.	भक्ति सुधा	२१
११.	सत्संग समाचार	२६

अस्मदीयम्

अनन्त प्रकार के दुखो, कष्टो, संकटो से बचने के लिये जीवात्मा को भगवान के नाम का स्मरण करना ही एक मात्र उपाय है। इसी कारण भगवान श्रीहरि सदैव सभी भक्तजन अखंड भगवान की स्मृति रहे। इस कारण से कथा-वार्ता और सत्संग दिन में पाँच बार हमेशा करते थे। उससे भी विशेष बड़े-बड़े उत्सव समैया करते थे। और करवाते थे। इस कारण से उस समैया में जाने-अनजाने ज्ञानी-अज्ञानी जीव भूल से भी आ जाये तो उसेक हृदय में स्मृति बनी रहे। बाद में कभी समैया होने पर स्मृति का पुनः जागरण हो जाता है। वहाँ पर उसे भगवान तथा भगवान के भक्त याद आ जाते है। उसमें भी उन बातो से उसके हृदय में भगवान की मूर्ति स्मृति में आ जाये। तो उस आत्मा का आन्तयक महामोक्ष प्राप्त हो जाता है। इस लिये श्रीहरि कहते है कि इस कारण से हम समैया और उत्सव करते है।

अपने जीवन में भी इतना बड़ा समैया उत्सव का शुभ योग आ जाये तो उसकी वास्तविक महिमा समझकर हृदय, तन, मन, धन की सहायता सदैव देकर भाग्यशाली बनना चाहिए। समस्त विश्व में व्याप्त वर्तमान संकट को पार करके दो सौ वर्ष पहले सर्वावतारी भगवान श्रीहरि अपने ध्यान में रखकर प्राण प्रतिष्ठा कराये। भगवान श्री नरनारायणदेवो की दिशताब्दी महामहोत्सव आयेगा। तब अपने हृदय मन में साक्षात् श्रीहरि अपने अपररुप में धर्मवंशी आचार्य के ताप में इस समैया में दर्शन देते है। उनकी अलौकिक झाँकी निकले। ऐसी श्रद्धा भक्ति अपने हृदय में जागृत करने का प्रयास करे। और उसकी सफलता श्री नरनारायणदेव प्रदान करे। ऐसी उनके चरणो में प्रार्थना के साथ जय श्री स्वामिनारायण।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

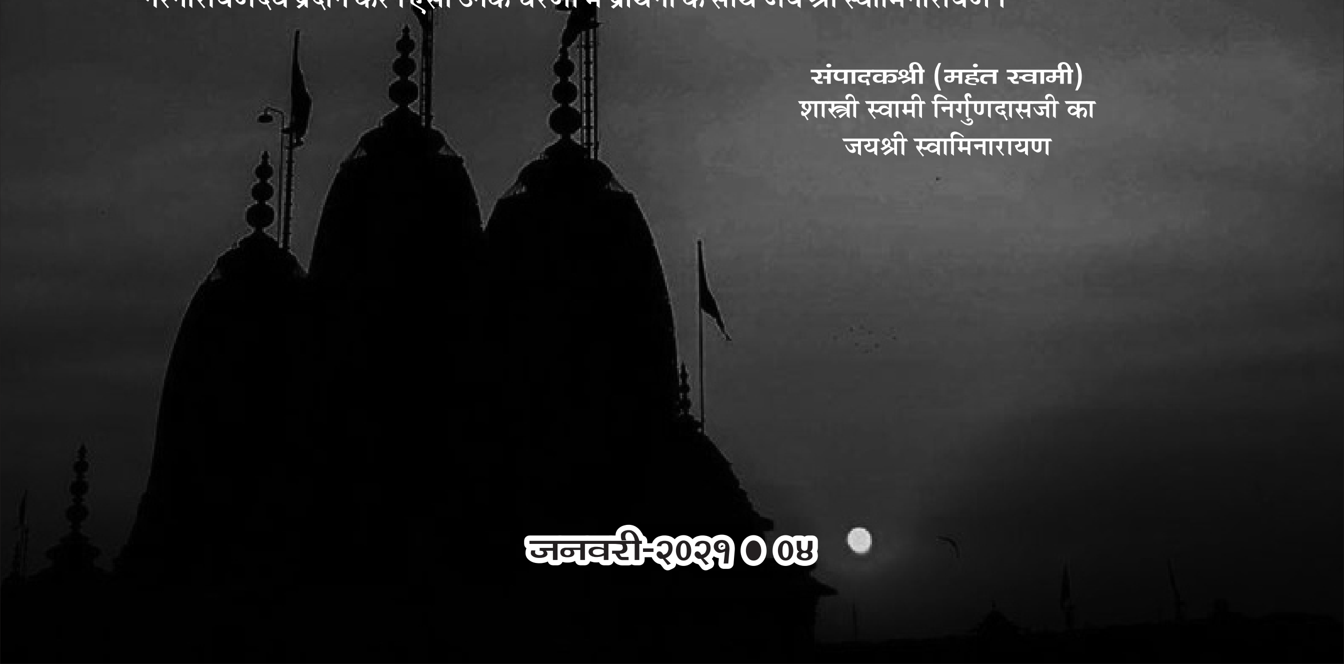

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की

रुपरेखा

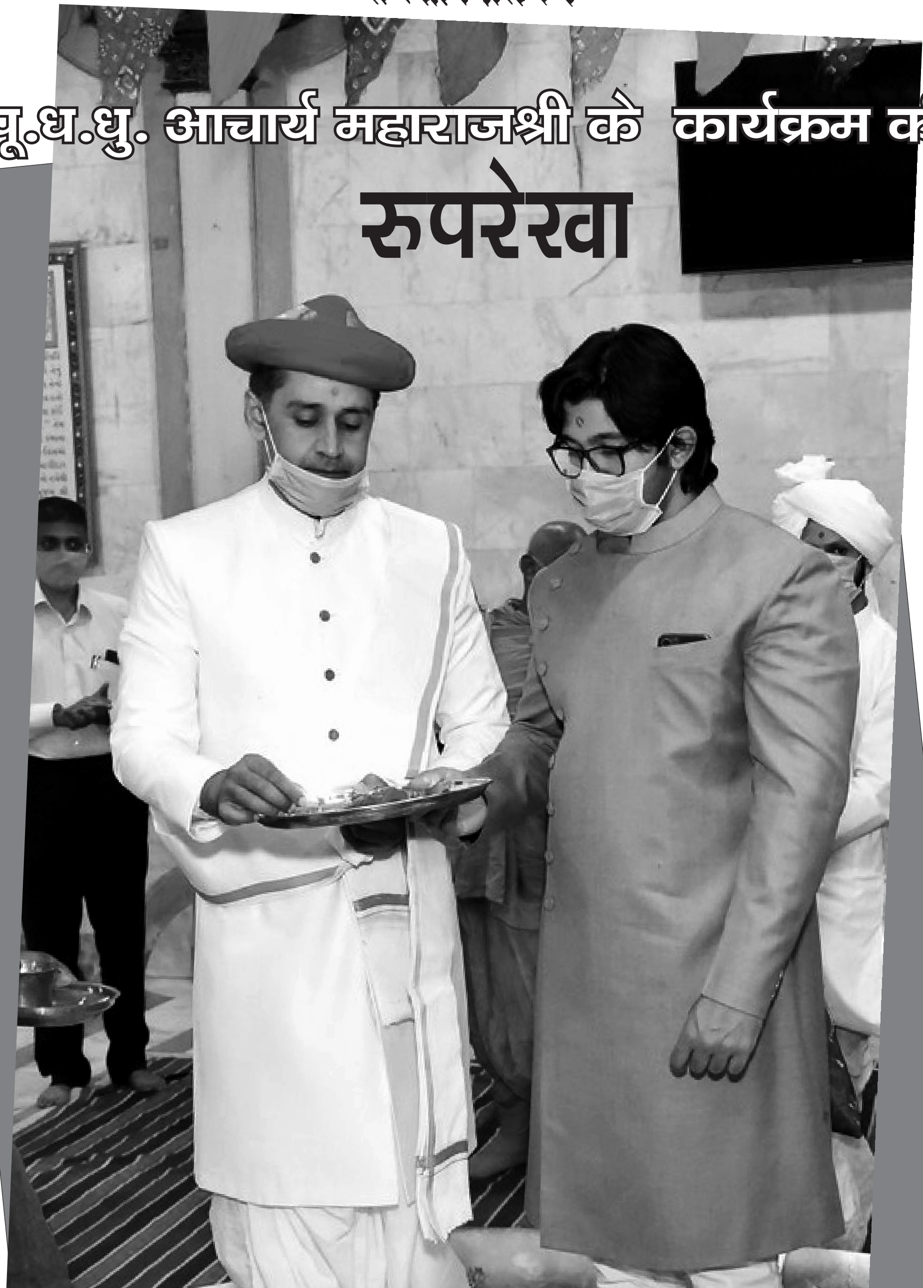

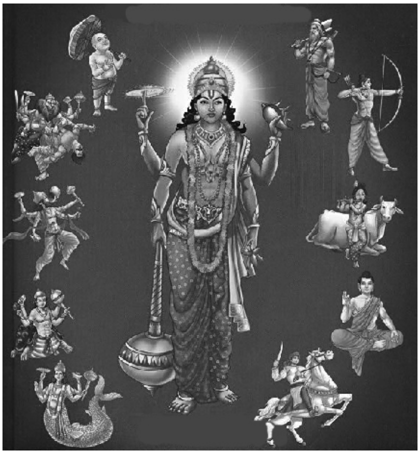

दशावतार स्तोत्र

– महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(कालुपुर, अमदावाद)

॥ द्रुतविलम्बितवृत्तम् ॥

प्रथमतः शकुलाकृतिरादधे श्रुतिगणोधरणाय धरातले ॥
पटुतरासुरसंघ विनाशिने भुवि भजे हरिकृष्णमहं हृदि ॥१॥
सपदि येन नवातिशितैर्नरवैरसुरराडदितिजः प्रतिचरस्करे ॥
तदुरसोऽतिविधाय विदारणं भुवि भजे हरिकृष्णमहं हृदि ॥२॥
अतुलमन्दरभृत्कमठाकृतिरित्तलमिवाथ दधे धरणीतलम् ॥
सगिरियेन लसद्दशनांचले भुवि भजे हरिकृष्णमहं हृदि ॥३॥
त्रिपदमात्रमितक्षितियाचनं छलतया वरवामनरुपिणि ॥
छलयितु बलिमेव तनुर्धृता भुवि भजे हरिकृष्णमहं हृदि ॥४॥
धृतशरासनराजकुलं कुले भुवि भृगोरवतीर्य समूलतः ॥
परशुभृद्वपुषा निधनीकृतं भुवि भजे हरिकृष्णमहं हृदि ॥५॥
क्षितिसुतापतिदाशरथिर्भवन् पृथुतरं प्रविलंध्य पयोनिधिम् ॥
दशमुखं बिभिदे किललीलया भुवि भजे हरिकृष्णमहं हृदि ॥६॥
प्रबलकंसकुलं बिभिदे भृशं गिरिधरो वसुदेवसुतोऽथ यः ॥
जनितमात्रजनातिदयोदधिः भुवि भजे हरिकृष्णमहं हृदि ॥७॥
असुरसंघविमोहनकारकः सकरुणोऽथ कलेरवसानके ॥
अखिलपापिविनाशवित्ताश्च यो भुवि भजे हरिकृष्णमहं हृदि ॥८॥
॥ इति दीनानाथ भट्ट रचित दशावतारस्तोत्रम् ॥

भगवान श्रीहरि स्वामिनारायण मानव शरीर धारण करके पृथ्वी के उपर विचरण कर रहे थे । उस समय कई जीवो को अपने दिव्य स्वरुप का विश्वास कराने के लिये किसी को समाधी मे तथा कुछ को साक्षातरुप में अपने अवतारो को दर्शन कराते थे । उसी क्रम में महान पंडित दीनानाथ भट्ट को दश उवतारो का दर्शन दिये थे । उनकी स्तुति उन्होने भगवान श्रीहरिकृष्ण के रुप में किये है । इस अष्टक में स्तुति के अर्थ का ज्ञान प्राप्त करते है ।

**प्रथमतः शकुलाकृतिरादधे श्रुतिगणोधरणाय धरातले ॥
पटुतरासुरसंघ विनाशिने भुवि भजे हरिकृष्णमहं हृदि ॥१॥**

युग के अन्त में सत्यव्रत नाम के राजा और ऋषि मुनि तथा वेदो का उद्धार करने के लिये मत्स्य रुप धारण करके हयग्रीव नाम के असुर का विनाश करके ऋषि मुनि वेदो और राजा की रक्षा करने वाले इस कलियुग में मनुष्यमात्र को पृथ्वी के उपर भजन-उपासना भक्ति करने योग्य हमारे आराध्य देव परमात्मा भगवान श्रीहरि कृष्ण श्री स्वामिनारायण ही ही है । उनका मै हृदय पूर्वक भजन करता हूँ ।(१)

**सपदि येन नवातिशितैर्नरवैरसुरराडदितिजः प्रतिचरस्करे ॥
तदुरसोऽतिविधाय विदारणं भुवि भजे हरिकृष्णमहं हृदि ॥२॥**

दिती पुत्र असुरो के राजा हिरण्यकश्यपु ने प्रिय भक्त प्रहलाद का अपार कष्ट दिये । तब खम्बे में से बिकराल नृसिंह का रुप धारण करके असुर को सभी

वरदानो को याद दिलाकर अपने जंघो पर रखकर तीक्ष्ण नखो से उसके हृदय को चीर दिये थे । संसार को असुरो से रक्षा हेतु कलियुग में मानव रुप में आकर, भजन उपासना करने योग्य हमारे आराध्य देव परमात्मा भगवान श्रीहरिकृष्णजी स्वामिनारायण ही है । मैं उनका हृदय पूर्वक भजन करता हूँ ।(२)

अतुलमन्दरभृत्कमठाकृतिरित्तलमिवाथ दधे धरणीतलम् ॥
सगिरियेन लसद्दशनांचले भुवि भजे हरिकृष्णमहं हृदि ॥३॥

देव और दानव अमरत्व प्राप्त करने के लिये । समुद्र के तल में स्थित अमृत को प्राप्त करने के लिये समुद्र मंथन हेतु अति विशाल मदराचल पर्वत को लाकर मंथन प्रारम्भ किये । लेकिन पहाड अति भारी होने कारण रसातल की तरफ जा रहा था । तब अपने भक्त देवो के कार्य सिद्धि के लिये । अति कठोर पीठवाले कच्छप बनकर पर्वत का भार सहे है। ऐसे कलिकाल में पृथ्वी पर मनुष्य के भजन हेतु हमारे आराध्यदेव भगवान श्रीहरिकृष्ण श्री स्वामिनारायण ही है । मैं उनका हृदय पूर्वक भजन करता हूँ ।(३)

त्रिपदमात्रमितक्षितियाचनं छलतया वरवामनरुपिणि ॥
छलयितु बलिमेव तनुर्धृता भुवि भजे हरिकृष्णमहं हृदि ॥४॥

अपने भक्त असुरो के राजा के पास छलकपट से मात्र तीन पग पृथ्वी की याचना करके त्रिलोकी राजा इन्द्र आदि को सुखी करने वाले श्रेष्ठ ब्राह्मण बटुक का रुप धारण करने वाले इस कलियुग में मनुष्य के लिये पृथ्वी के उपर भजन भक्ति उपासना करने योग्य हमारे आराध्य देव परमात्मा भगवान श्रीहरिकृष्ण श्री स्वामिनारायण ही है । मैं उनका हृदयपूर्वक भजन करता हूँ ।(४)

धृतशरासनराजकुलं कुले भुवि भृगोरवतीर्य समूलतः ॥
परशुभृद्वपुषा निधनीकृतं भुवि भजे हरिकृष्णमहं हृदि ॥५॥

प्रजा के उपर शासन करने वाले क्षत्रिय राजा को जब अहंकार और उच्छश्रीलता आ गई । तब भृगुकुल में प्रगट होकर हाथ में फरसा धारण करके कार्तवीर्य सहस्त्रार्जुन राजा को तथा इक्कीस बार उसी तरह के क्षत्रिय शासको का मूल से निकंदन करके ऐसे इस कलियुग में पृथ्वी उपर भक्ति भजन उपासना करने योग्य अपने आराध्यदेव परमात्मा भगवान श्रीहरिकृष्ण श्री स्वामिनारायण ही है । मैं उनका हृदय पूर्वक भजन करता हूँ ।(५)

क्षितिसुतापतिदाशरथिर्भवन् पृथुतरं प्रविलंध्य पयोनिधिम् ॥
दशमुखं बिभिदे किललीलया भुवि भजे हरिकृष्णमहं हृदि ॥६॥

पृथ्वी के अन्दर से प्रगट जनक नन्दिनी जानकी सीताजी के पति मर्यादापुरुषोत्तम राम के रुप में महाराजा दशरथ के राजमहल में प्रगट होकर विशाल सागर उतरकर अत्यधिक शक्ति शालीदक्ष सिरवाले रावण को खेल-खेल में नाश करने वाले । इस कलियुग में पृथ्वी के उफर भजन आराधना भक्ति करने योग्य हमारे आराध्यदेव परमात्मा भगवान श्रीहरिकृष्ण श्री स्वामिनारायण ही है । मैं उनका हृदय पूर्वक भजन करता हूँ ।(६।

प्रबलकंसकुलं बिभिदे भृशं गिरिधरो वसुदेवसुतोऽथ यः ॥
जनितमात्रजनातिदयोदधिः भुवि भजे हरिकृष्णमहं हृदि ॥७॥

(पेईज नं. १५)

मोर मुकुट

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम-लक्ष्मण-जानकी जी चौदह वर्ष का वनवास करते हुए । नदी, पर्वत, जंगल में से गुजरे थे । भगवान का अवतरण भक्तो के कल्याण के लिये होता है । इसमें जो भी मुमुक्षु जन्म-जन्मान्तर से परमात्मा की प्रतिक्षा कर रहे थे । ऐसे मुक्तो, भक्तो को पावन करने दर्शन देने के लिये जिसकी जैसी मनोकामना पूर्ण करना हो । तथा जिसको भी पहले से वरदान दिये थे । उन सभी का कल्याण करने के लिये श्रीहरि दशरथनंदन रघुकुल मणी श्रीराम तथा श्रीराम के अनुज लक्ष्मणजी तथा जगतजननी जगदंबा जानकी ये तीनो परमतत्वो द्वारा जिन को लाभ नही मिला था । उन्हे इस वनवास काल में प्राप्त हुआ । जिस जगह पर जितने समय की आवश्यकता थी । उतने समय वहाँ निवास करके कल्याण का कार्य पूर्ण किये ।

उसी समय एक विकट जलहीन वृक्षहीन अरण्य को पार करते समय काफी समय लग गया था । गर्मी का मौसम था । अन्न-जल के विना कई दिन बीत गया था । माता जानकी को प्यास लग गई । जिसके कारण चलने में असमर्थ हो गई थी । वह एक छायेदार पेड के नीचे बैठ गयी । श्रीहरि से प्रार्थना कि है मेरे नाथ ! जलाभाव में प्राण निकल जायेगा अब यह कष्ट सहन नही हो रहा है । या तो प्रभु जल दे । या तो देह का प्राणान्त कर दे । श्रीराम-लक्ष्मणजी को भी अधिक प्यास लगी थी । लेकिन संतोष करके यात्रा कर रहे थे । लेकिन श्रीराम जानकी की यह अवस्था देखकर एक दिव्य लीला किये । आकाश की तरफ नजर करके बोले हे प्रकृति माया । आप से आग्रह करता हूँ कि यदि समीप में कोई जलाशय हो तो संकेत करे । श्रीराम सर्व शक्तिमान होने के बाद भी मनुष्य लीला करने पर श्री भगावन की आज्ञा से सेवा में स्वयं प्रकृति मोर का रुप धारण करके तुरंत प्रगट हुई । मोर रुप में भूदेवी बोली हे प्रभु ! थोडी समीप में ही जलयुक्त सरोवर है । आप हमारे पीछे-पीछे आइये मैं आप को सरोवर के पास ले जाउगी । लेकिन प्रभु आप की गति में और हमारे गति में अन्तर है । शायद रास्ता भूल जाने की सम्भावना होती है । इस कारण से मैं आप की सरलता तथा मार्गज्ञान हेतु कुछ कुछ अन्तराल पर अपने पंख को रखता जाउगा । उसी आधार पर वहाँ आप आये । यह कहकर मोर उडने लगा । इस प्रकार वह अपने पंख को गिरा कर नरम मार्ग जलाशय तक बना दिया । श्रीहरि पंख के सहारे धीरे-धीरे जलाशय तक पहुँच गये । श्रीराम-लक्ष्मण एवम् जानकीजीने मधुर जल का पान किये । शरीर में चेतना आई . आत्मा की आवाज से पमरात्मा देवी मोर पर खुश हुए । और बोले, हे प्रि यमोर आप हम तीनो की जान बचाने के लिये आप ने सहायता दिये । हम लोग जीवन-मरण के नजदीक आ गये ते । आप की सेवा से हम लोगो को जीवनदान मिला है । हम आप के इस उपकार को कभी नही विस्मृत करेगे । आप का कर्ज (उपकार) किस जन्म में दे पायेगे ?

आपने हमलोगो के जीवन बचाने के लिये । आप ने मृत्यु का वरण कर लिया । मुझे ज्ञात है और अपने पंख को मात्र एक मौसम में त्याग करते है । इसके विपरीत उसकी मृत्यु हो जाती है । आप ने हमारी रक्षा हेतु बलिदान दिये है । इस जन्म में इसका फल दे सके । यह सम्भव नही है । लेकिन आपने वाले समय में दूसरे जन्मावतार में (कृष्णावतार) उस समय आप के पंख को मेरी श्रृंगार में सदैव सर्वोपरि धारण करुगा । दिन-रात अपने पास रखूगा । ''हे मोर - जाईये आप को मैं ऐसा वरदान देता हूँ ।''

तब मोरने कहा, हे प्रभु, मुझे आप के रुप में प्रथम बार में ही जगत के पालक का दर्शन हुआ है । मैं अपने जीवन को धन्य मानता हूँ । पूरे सृष्टि को जो जल-भोजन प्रदान करें । वे श्रीहरि हमसे जल माँगे तो इससे बडी किस्मत किसकी होगी । मुझे इस सेवा का अवसर मिला मैं धन्य हो गया । इस प्रकार पंख विहिन मोर बात करते-करते मृत्यु को प्राप्त हो गया । श्रीराम के सानिध्य में मोर ने प्राण त्याग दिये । यह पद बड़े बड़े साधक और भक्तो को नही प्राप्त होते है ।

जब भगवान द्वापर युग के अंत में कृष्णावतार लेकर, रामावतार की प्रतिज्ञानुसार मोर के वरदान को स्वीकार कर । हमेशा मोर-मुकुट धारण करते थे । असंख्य कवियो लेखको-भक्तोने मोर पंख का वर्णन किये है । कोई ऐसा भजन नही है कि उसमें मोर पंख का वर्णन मिलता है । अलंकारो में श्रेष्ठ अलंकार मोर को देकर उसके पंख का ऋंगार मे रखा जाता है । मोर के पंख के रंग का वर्णन अतिशय मिलता है ।

भगवान इस संसार में जब जब प्रगट हुए है । तब भक्तो की सेवा अंगीकार करने का उद्देश्य रहा है । भगवान कभी भी अपने भक्तो की छोटी सेवा भूलते नही है । भले ही युग वीत जाये । कल्पो का कल्प भी समाप्त हो जाये । फिर भी भगवान अपने भक्तो को लाभ देते ही है ।

परमात्मा की आश्चर्यजनक चित्र-विचित्र मोर की रचना में भगवान ब्रह्माने अत्याधीक समय सम्पति दिये है । उसमें रुप गुण, रंग संस्कार, पवित्रता-आकार सदगुण देखने को प्राप्त होता है । संसार की समस्त सृष्टि को प्रिय लगे इस तरह की रचना किये है । उसमें भी भगवान श्रीराम लक्ष्मण जानकी से प्राप्त आशीर्वाद संसार में प्रसिद्ध कर देता है । अपने संस्कृति का प्रतीक मोर भारत का राष्ट्रीय पक्षी है । यह कृपा राम-कृष्ण के द्वारा मिली है ।

वर्तमान समय में मोर को घर में नही रख सकते हो । लेकिन मोर के पंख की पवित्रता-स्वच्छता-सात्विकता के द्वारा तन, मन, धन, सुख, शांति मिलती है । मोर पंख के बार में आज तथा प्राचीन काल में उसका प्रचार-प्रसार स्वीकृत है ।

निम्नलिखित शिखरबद्ध मंदिरो में नये महंत स्वामी की नियुक्ति

एप्रोच-बापुनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर स.गु. महंत स्वामी श्री धर्मस्वरुपदासजी गुरु स.गु. स्वामी जानकीवल्लभदासजी, स.गु. स्वामी वासुदेवचरणदासजी गुरु स.गु. स्वामी जानकीवल्लभदासजी (कालुपुर मंदिर)

चराडवा (ता. हलवद) श्री स्वामिनारायण मंदिर (मूली मंदिर) स.गु. महंत स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी जीष्णुचरणदासजी, स.गु. महंत शा. स्वामी नीलकंठप्रसाददासजी गुरु स.गु. स्वामी जीष्णुचरणदासजी

धरियावद (राजस्थान) श्री स्वामिनारायण मंदिर (कालुपुर मंदिरके) स.गु. महंत स्वामी स्वयंप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी सत्यप्रकाशदासजी

लीम्बडी (मूली प्रदेश) श्री स्वामिनारायण मंदिर महंत स्वामी स.गु. मुक्तस्वरुपदासजी गुरु स.गु. स्वामी प्राणजीवनदासजी (मूली मंदिर)

श्री कृष्णार्पण

– प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल (अहमदाबाद)

श्री स्वामिनारायण भगवान के भक्त ऐसे निष्ठावान ब्रह्मचारी श्री मूलजी ब्रह्मचारी (अर्थात् श्री मुक्तानंद वर्णी) उनके पास जमीन, स्वामी श्री सहजानंदजी के नाम श्रीकृष्णार्पण उसके मूल प्रमाणपत्र अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प.पू.श्री बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने सभी भक्तो के दर्शन हेतु प्रदान किये है । यह महाप्रसादी रुपी पत्र थोडे दिन के बाद सभी के दर्शन हेतु म्यूजियम में रख दिया जायेगा ।इस पत्र का संक्षिप्त रुप से निष्कर्ष निम्नलिखित है ।

- **यह पत्र : दस्तावेज फाल्गुन वद-१ संवत १८८१ के दिन का है ।**
- **इस दस्तावेज से मछीयाव गाँव की जमीन-खेत श्री कृष्णार्पण की गई है ।**
- **मूलजी ब्रह्मचारी अपने अधिकार की खेती स्वामी सहजानंदजी के नाम से कृष्णर्पण किये है ।**
- **यह दस्तावेज लिखने वाले ठक्कर लाधा रामजी श्री गढडा वाले है ।**
- **यह दस्तावेज स्टेम्प पेपर पर लिखा गया है । सरकारी खजाने का चार आने का स्टैम्प पेपर है ।**
- **इस दस्तावेज को पंजीकृत करके, अंग्रेज साहबने उस पर क्रमांक लिखकर हस्ताक्षर किये है ।**
- **इस दस्तावेज के द्वारा एक बीधा खेत ब्रह्मचारी महाराजने स्वामी सहजानंद को कृष्णार्पण किये है ।**

विवरण : सभी ब्रह्मचारीयो में शिरोमणी, अखंड आजीवन पर्यन्त नैष्ठिक ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने वाले, श्रीहरि के आज्ञाकारी सेवक सिद्धदशावले भक्तराज का जन्म सं. १८२२ में मछियाव गाँव में औदिच्य ब्राह्मण परिवार में हुआ था । उनका पहले का नाम मूलजी था । श्रीहरिने उन्दे दिक्षा देकर मुक्तानंद वर्णी के नाम से नामित किये थे ।

नंदमाला में मंजुकेशानंद स्वामी लिखते है कि

मुकुंदानंद मोटा ब्रह्मचारी मारुति आप थया तनुधारी ।
जेने करी सेवा स्वामीनी प्रीते, रह्या हरि आगे हाजर शुभ रीते ॥

मुलजी ब्रह्मचारी हनुमानजी के अवतार थे । कई स्थानो पर प्रमाणित उल्लेख है । श्रीहरि और ब्रह्मचारी का चिर स्मरण रहे । इस उद्देश्य से गढडा में श्री गोपीनाथजी महाराज और उनके सेवकरुप में हनुमानजी की मूर्ति स्थापित की गयी है । उस समय श्रीहरि बोले थे । हनुमानजी नैष्ठिक व्रत धारी है । और हमारे सेवक है । गोपीनाथजी मेरा स्वरुप है । और ये हनुमानजी मूलजी ब्रह्मचारी के रुप है ।

इस महामुक्त मुलजी ब्रह्मचारी श्रीहरि माला देकर बोले कि किसी सुपात्र व्यक्ति को यह माला स्पर्श कराना तो उसे समाधिकी अवस्था में ला सकते हो ।इस प्रकार ब्रह्मचारी कई लोगो को समाधिका सुख दिये । एकबार अपने गाँव मछीयाव में एक हरिभक्त को समाधिकराये । कुछ काम से उन्हे बीच में गढडा जाना पडा । ब्रह्मचारीजी तत्काल जाने के लिये तैयार हो गये

। तब गाँव के मुखियाने कहा यह समाधिसे पीछे आये तभी आप गढडा जा सकते है। लेकिन श्रीहरि के आज्ञा का पालन करते हुए वह वहाँ रुके नही । और गढडा के लिये निकल गये । गाँव के मुखिया क्रोधित होकर, ब्रह्मचारी का घर, भंडार, खेत जमीन सब कुछ जात कर लिये। इसके बाद वर्षा काल आया। चारो तरफ के गाँव में वर्षा हुई । लेकिन इस गाँव में वर्षा नही हुई । गाँव के निवासी मुखिया को समझाने लगे कि आपने ब्रह्मचारी से दुश्मनी किया है। इस कारण से यह दुःख मिला है। इसके बाद गाँव के मुखिया दरबार और ग्रामवासीयो ने ब्रह्मचारी को वापस बुलाकर सन्मान किये । तत्काल वर्षा होने लगी थी । मुखियाँ सभी अचल-सचल सम्पात्ति वापस करके याचना किया कि आप गाँव में ही निवास करें। लेकिन ब्रह्मचारी को श्रीजी के साथ गढडा में रहना था । वह जमीन श्री सहजानंद स्वामी को श्रीकृष्णार्पण कर दिये।इस जमीन का लेख यहाँ पर है।

श्रीहरि जब सभी संतो को दो दो के समूह में बाँटे थे । तब बोले हमारे साथ मूलजी ब्रह्मचारी रहेगे । वे सहजानंद मूलानंद की समूह को ज्ञान करे । श्रीहरि के महापूजा के द्वितीय आवरण में प्रथम मूलजी ब्ह्मचारी का प्रथम स्थापन किया गया है। शिक्षापत्री श्लोक-४ में नैष्ठिक ब्रह्मचारी के रुप में उनका वर्णन है । वचनामृत महाग्रंथ में उन्होने प्रश्न नही पूछा है। लेकिन उनका कई स्थानो पर वर्णन है।

ग.अ.-२६ : मूलजी ब्रह्मचारी जैसा हो, यदि उनको धन, स्त्री का लाभ मिले तो भी अपना आचरण त्यागते नही है।

ग.अ.-५२ : ये मुकुंद ब्रह्मचारी और रतनजी शर्माते नही है।इस कारण से हमसे अच्छी बतनी है।

ग.अ.-४७ : जिस प्रकार हमारा महत्व समझ कर हमारी सेवा मूलजी ब्रह्मचारी करते है। उसी प्रकार में भी ब्रह्मचारी का महात्म्य जानता हूँ।

कारीयाणी-६ : हमारे स्वभाव को तो मूलीज ब्रह्मचारी तथा अन्य हरिजन कई वर्षो से हमारे पास रहते है। तथा मुझे जानते है।

अहमदाबाद : मूलजी ब्रह्मचारी और रतनजी ये अतिशय चालाक कहाँ है ? लेकिन कल्याण का भाव अधिक है । इस लिये भगवान जैसे खुश रहे वह उन्के करने आता है।

ऐसे महान वर्णीराज ने अपनी व्यक्तिगत जमीन का दस्तावजे म्यूजियम में रखे है । इस सम्प्रदाय का अहोभाग्य है । इसी कारण से लाखो हरिभक्त, संत, महंत बड़े महाराजश्री के संग्रह तथा दूरर्शिता को कोटि-कोटि प्रणाम करते है।

स्वामी सहजानंदजी महाराजजी के नाम कृष्णार्पण की गई जमीन तथा सम्पत्ति के दस्तावेज कार्यालय में रखे गये है । यह दस्तावेज उस समय के चार आने का सरकारी स्टैम्प पेपर है । इससे इसकी विश्वसनियता बढ जाती है । दस्तावेज का पंजीकरण अंग्रेज साहबने क्रम और हस्ताक्षर किये थे । इस दस्तावेज को लिखने वाले ठक्कर लाधा रामजी है । श्रीहरि के पत्रव्यवहार को देखते थे । यही ठक्कर लाधा रामजी देश विभाग का लेख जब लिखा गया तब वे साक्षी के रुप में हस्ताक्षर किये थे । ऐसे विश्वास पात्र द्वारा लिखा । यह पत्र वर्णीराज ब्रह्मचारी ने कृष्णार्पण की गई जमीन और स्वामी सहजानंद के नाम, सरकारी स्टैम्प पेपर के उपर, पंजीयन अधिकारी का नाम, नम्बर इस पत्र की आदितियता, विश्वसनीयता और महानलता बताते है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि दस्तावजे के नीचे लिखने वाले का दहस्ताक्षर होना चाहिए । ब्रह्मचारीजी पूर्ण निरक्षर थे । हस्ताक्षर वाली जगह पर

ब्रह्मचर्य का प्रतीक यज्ञोपवीत के तीन धागे का प्रतीक है । क्योकि इस यज्ञोपवीत में ब्रह्मा, विष्णु महेश की उपस्थिति है । दस्तावेज लिखने वाला लिखा है । यह प्रतीक जमीन लिखने वाली की है । निष्ठावान ब्रह्मचारी का ब्रह्मतेज क्या है । उसके यज्ञोपवीत का क्या महत्व है ? यह एक साक्ष्य है । शुद्ध एवम् पवित्र ब्राह्मण जब यज्ञोपवीत हाथ में लेकर प्रतिज्ञा करता है तो वह एक प्रमाण हो जाता है । वह यदि कोई शब्द बोलता है । तो वह पत्थर पर लकीर हो जाती है । वह अवश्य सत्य होती है । सम्प्रदाय में इस वर्तमान समय में ऐसा दस्तावेज नही दिखता है । उस गाँव के मुखिया भी निरक्षर थे । फिर भी इस दस्तावेज में साक्षी के रुप में है । उन्होने निशान बनाकर सहमति दिये थे ।

दस्तावेज के शब्दो को ध्यान से पढने पर ज्ञात होता है ''आप को श्रीकृष्णार्पण श्री नरनारायण स्वामी के लिहे है ।'' अर्थात् श्रीहरि-सहदजानंद स्वामी और श्री नरनारायण का एकात्मभाव है । इस लेख में सं. १८८१ फाल्गुन वद-१ है । तब अहमदाबाद में श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा हो गयी थी । तब ब्रह्मचारी महाराज ''स्वामी सहजानंद जोग'' लिखकर ''श्री नरनारायण स्वामी के विषय'' में लिखते है । उसका कारण स्पष्ट है कि श्री नरनारायणदेव की श्रीजी महाराज स्वयं है । ऐसा वचनामृत ग्रंथ में बार-बार अनेक जगहो पर प्रतिपादन किया गया है । उस समय प्रत्येक भक्त संत हरिभक्त अपने नित्य सेवा पूजा में श्री नरनारायणदेव की छपी मूर्ति अवश्य रखते थे । और ये नरनारायणदेव ही सहजानंद स्वामी है । यह अवश्य ही था ।

इस दस्तावेज में.... सलामी इत्यादि त्रिकाल नही है । ऐसे शब्द पढे जा सकते है । कई शब्द पढा नही जा सकता है । लेकिन लेख से यह ज्ञात होता है कि उस जमीन पर किसी प्रकार का करार-बन्धक इत्यादि नही था । यह जमीन अवश्य Clear Title वाली है । उस काल के दस्तावेज की भाषा पूर्ण जानना यह असम्भव है ।

प्राय: व्यक्ति के पास जो शेष या अधिक मालिकाना की वस्तु होती है । वह दान पुण्य अच्छे के लिये करता है । महापुण्य लोभ रहित चरित्र को दर्शाता है । यह जमीन उनके परिवार के पालन हेतु थी । वह भी उन्होने कृष्णार्पण कर दिया था । साधु जीवन जीये थे । आज सत्ता पद प्रतिष्ठा और अहंकार को पोषने वाला दान के बदले एक उत्तम उदाहरण है ।

हनुमानजी महाराज जैसे मेघावी शक्ति धारक नैष्ठिक ब्रह्मचारी ये महापुरुष अखिल ब्रह्मांड के आधार ऐसे परमात्मा के नाम लेख किये है । श्रीहरि के विशेष लेखको ने लिखा हो, स्टेम्प पेपर हो, पजीयन क्रमांक तथा अंग्रेज साहब ने हस्ताक्षर किया हो । तथा ब्रह्मतेज की किरण निकले ऐसे पवित्र जनेऊ की साख हो । ऐसे अद्वितीय लेख उसके मूल स्वरुप में प.पू. बड़े महाराजश्री आज १९५ वर्षो तक सुरक्षित रखे हो । अब भक्त जनो के दर्शन के लिये । अपने व्यक्तिगत तिजोरी में से निकालकर म्यजियम में अर्पण कर दिये । यह उनकी सत्संग के प्रति आत्मबुद्धि की पराकाष्ठा दर्शाता है । हम सभी की भाग्य है कि हम लोगो को ऐसे धर्मवंशी धर्मकुल गुरु मिले है ।

वर्तमान समय कोरोना महामारी का विषय समय खत्म हो जाय । तो आप सभी हरिभक्त इस अलौकिक अद्वितीय श्रीजी प्रसादित लेख की म्युजियम में आकर दर्शन अवश्य करे । इसके दर्शन से रोम-रोम खुश होकर आत्मशुद्धि की लहर मिलेगी । जो चित्त को अलौकिक सुख-शांति प्रदान करेगी ।

उत्तम संतान के लिये शास्त्र कथन

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

कोई व्यक्ति सज्जन हो, चरित्रवान हो, अच्छे स्वभाव वाला हो, विद्वान हो, समृद्ध हो तथा साथ में दानवीर भी हो, ज्ञानी हो, भगवान का भक्त हो इस प्रकार के सद्‌गुणी व्यक्ति समाज को सुख देते है। और सबको प्रिय लगते है। इस प्रकार के संतान से उनके माता-पिता अपार सुख प्राप्त करते है। तथा अपने को गौरवान्वित महसूस करते है। उत्तम संतान-आदर्श नागरिक से उत्तम समाज तथा अच्छे राष्ट का निर्माण होता है। प्रत्येक माता-पिता की यह इच्छा रहती है कि मेरा लडका संस्कारी, बडा आदमी होकर हमारा नाम रोशन करे। समाज को उत्तम नागरिक भी देना एक प्रकार की समान सेवा ही है। माता-पिता की यदि सबसे बड़े जिम्मेदारी कोई है तो अपने बच्चो को संस्कार देना, भगवान के प्रति लगाव पैदा करना। तथा जन्म-मृत्यु से मुक्ति का मार्ग बताना है। लेकिन श्रेष्ठ वस्तु को प्राप्त करने के लिये पहले से तैयारी करना पडता है। उदाहरण स्वरुप किसान को अच्छी फसल प्राप्त करने के लिये अच्छे बीज से लेकर, खाद, सिंचाई, दवा, तथा फसल की देखभाल करना पडता है। उसी प्रकार हमें भी ध्यान देना चाहिए।

चार आश्रम में प्रथम ब्रह्मचर्य आश्रम में धर्म का पालन, विद्या का अध्ययन, जिसका वैराग्य के प्रति दृढ लगाव हो उसे त्याग आश्रम स्वीकार करके धर्माचरण करते हुए कई लोगो को कल्याण कर सकता है। वैराग्य का भाव न होने पर गृहस्थ आश्रम में रहकर धर्म का पालन करके आत्मकल्याण कर सकते है। पुरुष और औरत आपस में एक दूसरे के कुल, सुसंस्कार, चरित्र, उम्र, स्वास्थ्य का अध्ययन करके विवाह करे। व्यवहार सम्बन्धहोने के कारण शिक्षापत्री में श्रीहरि की आज्ञानुसार खूब विचार करके करना चाहिए। नही तो बाद में पूरी उम्र पश्चाताप करना पडता है। अथवा मेल होने से तलाक की स्थिति बन जाती है। गृहस्थ आश्रम में स्वच्छंदता नही मिलती है। शास्त्रोक्त के अनुसार कामपूर्ति करना पडता है। गृहस्थ को भी ब्रह्मचारी कहा गया है। अपनी पत्नी को छोडकर अन्य सभी औरते माँ, बेटी, बहन के समान होती है। व्रत के दिन स्त्री सम्पर्क में नही आये। ऋतुकाल के बाद स्त्री संसर्ग करे। (प्र.प्र.-३५) ऋतु के दिन से सोलह रात्रि तक ऋतु काल माना जाता है।

श्री स्वामिनारायण संहिता ग्रन्थ मे घेला जोशी के प्रस्नोतर में स्वयं श्रीहरि अच्छी प्रजा होने का कारण बताते है। रजस्वला औरत अपवित्र मानी जाती है। तीन दिन तक शिक्षापत्री अनुसार रजस्वला औरत को किसी का स्पर्श नही करना चाहिए। श्रीहरि कहते है कि रजस्वला औरत से पुरुष रात्रि में सम्पर्क करे तो वह अल्पायु विद्याहीन, व्रत भ्रष्ट, पतित पापी, पर स्त्री गामी अतिदरिद्र पुत्र पैदा होता है। पाँचवी रात्रि में सम्पर्क से कन्या, गर्भ में अधिक रक्त होने से कन्या, शुक्र-वीर्य अधिक होने से पुत्र, रज और वीर्य सम होने पर नपुंसक बच्चे पैदा होते है। साँतवी रात्रि के साथ में बांझ कन्या, आठवी रात्रि के साथ से सर्वगुण सम्पन्न पुत्र, नवमी की रात्रि साथ से कन्या, दशमी रात्रि के साथ से पंडित पुत्र, ११ वीं रात्रि के साथ से कन्या, १२ वी रात्रि के साथ

महाधर्मज्ञ वेद शास्त्र चार धर्म प्रवर्तक पुत्र, १३ वी रात्रि के साथ अति दुष्ट कन्या, १४ वी रात्रि का पुत्र, १५ वी रात्रि की पतिव्रता कन्या, १६ वी रात्रि का ज्ञानी पुत्र प्रसन्नता से शुद्ध स्त्री के साथ संसर्ग करने पर उत्तम सन्तान पैदा होती है । निषेधवाले चार रात्रि के क्रमशः गुगे, बहरे, लूले, लंगडे, पागल, दुष्ट प्रजा होती है।

ऋतु काल में अगली चार रात्रि वर्जित है । श्राद्ध के दिन, श्राद्ध के पहले वाला दिन, श्राद्ध का आगेका दिन, समग्र पर्व तिथियो, अमावस्या, पूर्णिमा, व्यतिपाद, दशमी, संक्रांति और एकादशी आदि के व्रत वाले दिन, दिन के समय, प्रदोष का समय, सन्ध्या के समय पितृपक्ष में अपने स्त्री के साथ संसर्ग नही करना चाहिए । आसुरी प्रकृति वाले माता-पिता के घर आसुरी बुद्धि वाले बच्चे जन्म लेते है । इस लिये प्रभु पारायण जीवन व्यतीत करना चाहिए । माता-पिता के कुसंस्कार गर्भ में खराब संस्कार बनाते है । जिसका जीवन धर्मभ्रष्ट और असंयमी होता है । उसके यहाँ राक्षसी बुद्धि वाले जीवात्मा जन्म लेते है।

श्रीमद् भागवत ग्रन्थ में दैत्यो की माता दिति का प्रसंग मिलता है । स्वर्गलोक में पार्षद जय और विजय सनकादि मुनियो द्वारा तीन जन्म तक राक्षस योनि में जन्म लेने का श्राप प्राप्त किये थए । जय-विजय विचार किये कि हमें अब दैत्य बनना निश्चित है । इस कारण से वे लोग अपने लिये धर्म रहित माता की खोज करने लगे । उसमें से एक संध्या काल है । यज्ञ कुंड के समीप कश्यपमुनि बैठे है ।उसी समय में संध्या काल में उनकी पत्नी दिति को कामवासना जागृत हो गयी । वही कश्यपजी नाराज हो गये । पत्नी को समझाने लगे है । देवी इस तरह की माँग आप को शोभा नही देती है । शायंकाल में असुर, भूत तथा गंदे जीव वातावरण में टहलते है । यदि इस समय गृहस्थ आश्रम का लाभ लेने से राक्षस जैसे राक्षसी प्रवृति वाले प्रजा जन्म लेती है । आप इस समय धर्म की अवहेलना कर रही है । इस समय पर प्रत्येक मनुष्य को भगवान की आरती, धुन, भजन, कीर्तन, स्तुति तथा धार्मिक कार्य करना चाहिए । ऐसीशास्त्र की आज्ञा है । धर्म की मर्यादा छोडने पर दुख मिलता है । कश्यपजी काफी समझाये । फिर भी दितिने समझा नही,. संध्या काल में पति के ईच्छा विपरीत ऋतुदान प्राप्त की थी । उसी समय आकाश में माँ की खोज में जय-विजय को अवसर प्राप्तो गया । ये हम लोगो के लिये श्रेष्ठ है । दोनो दिति के गर्भ में प्रवेश कर गये । दिती गर्भवती हुई । कुछ दिनो के बाद हरिण्याक्ष और हिरण्यकश्यप का जन्म हुआ । जो दैत्य बनकर त्रिलोक में हाहाकार मचा दिये थे ।

मनुष्य के जीवन में १६ संस्कार शास्त्र सम्मत है । जो सभी के लिये अनुकरणीय है । प्रत्येक संस्कार का अपना महत्व होता है । प्रत्येक संस्कार के केन्द्र बिन्दु भगवान होने चाहिए । गर्भाधान के समय भी भगवान का स्मरण करने से माता के गर्भ में पवित्र आत्मा प्रवेश करती है । सन्तानोत्पाति के लिये धर्म की मर्यादा में रहकर काम क्रीडा भी गीतानुसार भगवान का स्वरुप है । गर्भादान के बाद माता को अति पवित्र और संयमी जीवन व्यतीत करना चाहिए । हमेशा अच्छे शास्त्रो का अध्ययन करना चाहिए । भगवान का भजन करना चाहिए । इससे भविष्य वाले बालक में संस्कार अच्छे आते है । प्रहलाद की कहानी तो हम लोग जानते ही है । दैत्यकुल में हिरण्य कश्यपु के पुत्र होने के बाद भी माता क्याधु के गर्भ में देवर्षिनारद का दर्शन मिला था । वह बालपन से उत्तम भक्त बन गये थे । बालक के जन्म के बाद बालक के पालन समय पर शुभ शास्त्र के कथा

सुनाकर उसे सिखाना चाहिए । प्रतिदिन मंदिर में ले जाना चाहिए । ये संस्कार बालक में पूरे जीवन भर बना रहता है । प्रहलाद ध्रुव बालको का भक्ति प्रधान जीवन माता के अच्छे संस्कारो से हुआ हुआ था । बालक सदैव अनुकरण प्रिय होता है । नरम पौधे की तरह किसी तरफ झुक जाता है । अच्छी आदते बालपन में सरलता से आ जाती है । इस लिये माता-पिता का आहार-आचार-व्यवहारु उत्तम होना चाहिए । यिद माता बाहर लारी के उपर पानी-पूरी खायेगी । तो बालक में यही आदत का प्रभाव पडेगा ।

यह बालक युवावस्था में आने के बाद स्कूल, कालेज जायेगा । वर्तमान काल में कलुषित वातावरण में उसके साथ-सम्बन्धपर ध्यान देना पडेगा । मित्रो पर लगातार ध्यान देना पडेगा । एकबार व्यसन की आदत पडजाने पर उससे मुक्त कराना कठिन होता है । मनुष्य मे अच्छे और बुरे गुण संगत से आते है । इस लिये युवको को सतपुरुषो का साथ रखना चाहिए । खराब लोगो के साथ नहीं रहना चाहिए । खराब लोगो के स्पर्श से, चर्चा करने पर तथा बैठने पर धर्माचरण नष्ट हो जाता है । अधर्मी के साथ पुरुषो की बुद्धि खराब हो जाती है । (स.जी.प्र.-२)

यदि अतिपापी का साथ मिल जाये तो पाप की वृद्धि होती है । अच्छे कर्म भी नष्ट हो जाते है । बाद में परमेश्वर का दोष देते है । मेरा मन क्यो नही अच्छा रखें । उसे महामूर्ख ही जाने (ग.प्र.प्र.-५५)

निष्कर्ष यह है कि अपने खुशी रहकर दूसरे को सुखी करना है तो स्वामिनारायण भगवानने हम लोगो को सिखाने के लिये कुछ छोडे नही है । इस लिये छोटी उम्र से ही सत्संग का लाभ उठाये । पत्ते गिर जाने पर वृक्ष बूंढा हो जाने पर कुछ मिलता नही है । बल्कि कुछ समय के बाद उसको निकाल दिया जाता है ।

(अनु. पेईज नं. ७ से आगे)

संसार के जीवो के उपर दया के सागर जैसी करुणावाले वसुदेवजी के पुत्र रुप में प्रगट होकर गोवर्धन पर्वत को अपने एक अंगुली के उपर धारण करने वाले महान बलवान कंस का वधकरने वाले, संसार की रक्षा करने वाले । ऐसे कलियुग में मनुष्य मात्र को पृथ्वी के उपर भक्ति आराधना करने योग्य हमारे आराध्यदेव परमात्मा भगवान श्रीहरिकृष्ण श्री स्वामिनारायण ही है । मैं उनका हृदय पूर्वक भजन करता हूँ ।(७)

असुरसंघविमोहनकारकः सकरुणोऽथ कलेरवसानके ॥
अखिलपापिविनाशवित्ताश्च यो भुवि भजे हरिकृष्णमहं हृदि ॥८॥

महा भयानक कलियुग के बलवान आसुरी वृत्तिवाला दुष्टकर्म करने वाले असुरो के समुदाय को अपने चरित्र के मोह से भ्रम उत्पन्न करने वाले और भक्तो के उपर करुणामयी समग्र हिंसको का विनाश कैसे कर सके उसका उपाय ढुँढ कर करते है । इस कलियुग में मनुष्यो को पृथ्वी उपर भजन-भक्ति उपासना करने लायक हमारे आराध्यदेव परमात्मा भगवान श्रीहरिकृष्ण श्री स्वामिनारायण ही है । मैं उनका हृदय पूर्वक भजन करता हूँ ।(८)

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस
magazine@swaminarayan.in

सेवा-परमधर्म

- गोरधनभाई ह. सुथार (मोडासा)

सेवा अनेको प्रकार से की जा सकती है । भूखे को अन्न देकर, बिमार की सेवा करके, बच्चो को शिक्षा हेतु विद्यालय बनाना, यात्रियो के लिये प्यायू की व्यवस्था, तालाब, कुँआ बनाना यह एक सेवा का रुप ही है। सेवा में स्वार्थ नही.... परमार्थ होना चाहिए। कुछ पाने की ईच्छा से की गई सेवा फलित नही होती है। और सेवा करते समय अन्त:करण में उपकार की भावना भी नही रखना चाहिए।

महान भक्त जलाराम गाँव के पास से गुजरने वाले साधुओ को अपने घर लेजाकर भोजन कराते थे। इसी प्रकारा बाखा बंजाराने पथिको के लिये कुए बनवाए थे। लोक मुख से आज भी उनलोगो का नाम लिया जाता है। चाहे गोंडल के राजा रहे हो। या वडोदरा के महाराज सयाजी गायकवाड ये लोग अपने राज्यो में विद्यालय खोलकर प्रत्येक वर्ग की शिक्षा के प्रति भूख को शांत किये थे। श्रवण जैसा भक्त माता-पिता को काँवड में लेकर तीर्थाटन कराये थे। पुंडरिक जैसे भक्त जब माता-पिता की सेवा कर रहे थे । तब तक विठ्ठलनाथजी अपनी जगह पर रह कर प्रतिक्षा किये थे।

भगवान स्वामिनारायणने अपने हाथ से लिखित ''शिक्षापत्री'' श्लोक नं. १३९ में लिखते है कि.... ''हमारे आधीन जो गृहस्थ, माता-पिता और गुरु तथा बिमार ऐसे व्यक्ति की सेवा अपने शक्ति के अनुसार जीवन भर करना चाहिए।''

उपरोक्त श्लोक को सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवानने अपने जीवन में व्यवहार में यथोचित करके समाज को सेवा का बड़ा उदाहरण पेश किये है।

बाल घनश्याम मात्र १२ वर्ष की उम्र में घर त्याग कर वन की तरफ प्रस्थान कर दिये थे । हिमालय में गोपाल योगी के पास रहकर ''अष्टांगयोग'' सिखे । लगभग एक वर्ष तक उन्होने ने उनकी सेवा की तथा दिव्यगति को प्रदान किये । भारत भ्रमण करते-करते वन विचरण के समय रामेश्वर जाते समय सेवकराम नामक रोग ग्रस्त साधु की एक मास तक सेवा किये थे। वह एक सेर घी पचाने की क्षमता रखते हुए भी उन्होने नीलकंट की सेवा लिया । अन्त में कृतघ्न समझकर उनका त्याग किये।

घनश्यामजीने माता-पिता अर्थात् भक्ति माता तथा धर्मदेव की अधिक सेवा किये थे। उन्हे मोक्ष प्रदान कराके। वे गृह का त्याग किये थे। इतना ही नही अपने जीवित रहते हुए ही नये मंदिर बनवाकर धर्म-भक्ति के रुप में अनपे माता-पिता की मूर्ति अपने सिहांसन के साथ प्रतिष्ठित किये थे। संसार को बताये कि ''माता-पिता को मत भूलना'' यह एक उत्तम उदाहरण प्रस्तुत किये थे।

भगवान इस बारे में अद्वितीय है न !!

इस प्रकार स्वंय सेवा करके, जीवन व्यवहार मे आचरण में रककर सभी को सेवा का महत्व समझाये है। ऐसा आदर्श जीवन में लाये यही आप सभी से याचना है।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर की ओफिस नंबर

Mo. No. : 82380 01666

WhatSapp No. : 99099 67104

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

इस वर्ष ठंड देर से आई है । मौसम विज्ञान कार्यालय के भविष्यवाणी के अनुसार भारत और गुजरात में ठंडी का असर अधिक रहेगा । एक तो कोरोना का कठिन समय उसमें अधिक ठंडक पडने की भविष्यवाणी लोगो को परेशान कर दी है । दूसरी तरफ कोरोना की रसी (वैक्सीन) आने की खबर से थोडी राहत का प्रभाव दिखायी देता है ।

वर्षो पहले - श्रीजी महाराज के समय में मौसम की भविष्यवाणी करने के लिये । आज के समयानुसार सुविधा-साधन नही थे । कुदरत की ठंड-गर्मी-वर्षा उस समय सहन करना पडता था । श्रीजी महाराज कितना भी खराब मौसम हो । उनका अविरत सत्संग विचरण चालु ही रहता था । ठंडी से बचने के लिये शाल ओढते थे । उस में से एक साल सुरक्षित है । कढाई का उत्कृष्ण उदाहरण है । स्वयं श्रीजी महाराज को धारण करना था । इस लिये कारीगरने शाल को अधिक लगन से बनाया था । साल गहरी नीले रंग तथा सुनहले तारो से बनाई थी । आचार्य परम्परा में से श्री स्वामिनारायण म्युजियम को प्राप्त यह शाल हॉल नम्बर ७ में दर्शन हेतु रखी गई है ।

– प्रफुल खरसाणी

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि-डिसम्बर-२०२०

दि. २१-१२-२०२०	लीलाबेन कनैयालाल पटेल - यु.एस.ए. - ह. भूमि तथा हिरेन - प्रेरणा सांख्ययोगी मंजूबा तथा भारतीबा कालुपुर हवेली।
दि. २६-१२-२०२०	भारतीबेन सूर्यकांतभाई खीमजीभाई - वडगामा

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-डिसम्बर-२०२०

रु. २,५५,०००/-	प.भ. एक हरिभक्त - बापुनगर
रु. १,०३,०००/-	अ.नि. जटाशंकर पोपटलाल परिवार - आंबावाडी - ह. पार्थ तथा मोर्य
रु. ५१,०००/-	प.भ. अशोकभाई सोमदास पटेल - कलोल
रु. ५०,२००/-	प.भ. बिपीनभाई दाहाभाई सोनी - बोपल
रु. ५०,०००/-	अ.नि. शांतिलाल नाथालाल ठक्कर - ह. गंस्व. कुसुमबेन एस. ठक्कर
रु. ५०,०००/-	प.भ. चुनीलाल दुर्लभजी सोनी - पलियडवाला - राणीप
रु. ५०,०००/-	प.भ. रमेशभाई जी. काछडिया - बापुनगर
रु. ५०,०००/-	प.भ. अरविंदभाई आर. डोंगा - बापुनगर
रु. २५,०००/-	प.भ. दिनेशभाई नारणदास पटेल - अहमदाबाद
रु. २५,०००/-	प.भ. करुणाबेन कांतिलाल दाणी - वटवा - निवृत होने पर
रु. २१,०००/-	अ.नि. भीखाभाई गोविंदभाई परमार - नवा वाडज - पौत्र चि. किर्तन मुकेशभाई परमार की शादी के अवसर पर
रु. १८,०००/-	प.भ. एन. एच. प्रधामानी - मुंबई
रु. १२,०००/-	प.भ. दरजी जगदीशभाई कालीदास - बोपल
रु. ११,०००/-	प.भ. राकेशभाई अमीचंदभाई पटेल - हिम्मतनगर
रु. ११,०००/-	प.भ. प्रियजीत पटेल तथा प.भ. अजय पटेल - कलोल
रु. ११,०००/-	प.भ. सरोजबेन आर. पंड्या - खाडिया - ह. बेला पंड्या
रु. ७,०००/-	प.भ. धर्मेन्द्रसिंह बापू
रु. ५,०००/-	प.भ. सोनी जिग्नेश नटवरलाल - पौत्र के जन्म पर
रु. ५,०००/-	प.भ. ध्यान तथा पार्श्व भार्गवभाई पटेल - नवा वाडज
रु. ५,०००/-	प.भ. स्नेहल कृष्णकांत पटेल - कांकरिया

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

अलौकिक श्रद्धा

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

आशा दृढ विश्वास मित्रो ! इस बात को पढकर आश्चर्य चकित न रहे। यह कोई कहानी नही है। बल्कि यह डोसाभाई की सत्य घटना है।

बंधीया गाँव में भगवान के चुस्त सत्संगी डोसाभाई रहते थे। उनके साथ उनकी माँ भी रहती थी। पत्नी पीहर में गयी थी।

एक दिन श्रीजी महाराज शायं काल के समय डोसाभाई के घर आये। डोसाभाई ने स्वागत किया। आईये-आईये महाराज। डोसाभाई चारपाई बिछाई, और बैढने के लिये बोले। फिर कहे प्रभु में भोजन बना रहा हूँ। भोजन आप अवश्य करे। श्रीजी महाराज की बोले हम तो विशेष कार्य से आये है। डोसाभाई के वाणी में विश्वास और दृढ निश्चयन का भाव भरा था। महाराजजी बोले कि डोसाभाई आप के पास जो धन-रुपया हो उसे यहाँ लाये। और एक वस्त्र का टुकडा भी लाये। उसमें गहने रुपये को बाँधकर गठरी बनाले। उस समय नोट नही होती है। नगद धन था। इस कारण से गठरी भारी हो गई। महाराजजी बोले यह गठरी लेकर हमारे साथ आये। डोसाभाई गठरी सिर पर रख कर चल दिये। डोसाभाई को किसी प्रकार का संदेह नही था। जैसी महाराज की आज्ञा हो।

गाँव के बाहर दोनो तरफ खेत थे। उन खेत के कुआ मे पानी था। प्रयोग में आने वाले कुए थे। थोडीदूर पर एक सूखा कुआँ था। महाराज वहाँ पर खडे हो गये। डोसाभाई से बोले ! यह गठरी कुए में डाल दे। डोसाभाई तुरंत गठरी कुए में फेकं दिये। आश्चर्य वाली बात यह है कि कोई शंका प्रश्न न करके गठरी को कुए में पेक दिये।

इसके बाद श्रीजी महाराज और डोसाभाई एक धर्मशाला में रात्री को आराम किये। प्रात होने पर महाराज जाने लगे। और डोसाभाई से बोलते गये। कि प्रातः कुए में से गठरी निकाल लेना।

इस तरफ डोसाभाई के घर में क्या घटना हुए ? रात में चोर आये थे। उन्हे पता था कि डोसा भाई के घर मे धन और गहना है। डोसाभाई को मारकर सभी धन चुरा लेगे। चोर घर में आकर बैठ गये। डोसाभाई घर पर उपस्थित नही थे। माताजी अकेले ही थी। चोर ऐसा कह रहे थे कि आज डोसाभाई को मारकर सब कुछ लूट लेना है। माताजी यह सब सुन रही थी। चोरो ने पिटारा तोड दिया। घर के अंदर कबाड और मटके सब तोड डाले थे। कपडे भी फाडे। लेकिन कुछ प्राप्त नही हुआ। ये लोग खाली हाथ वापस गये।

प्रातः कुछ समय के बाद डोसाभाई घर वापस आये। घर के सामने लोगो की भीड हाजिर थी। वह समझ गये कि कुछ तो गडबड हुआ है। घर जाकर देखे तो सभी सामान ईघर-उधर बिखरे हुए थे। वे समझ गये कि निश्चित हमारे प्रभुने हमारी रक्षा किये है। हमारे धन-गहने की रक्षा किये है। निष्कर्ष यह है कि प्रभु जो भी करे उन पर पूरा विश्वास रखना चाहिए।

मित्रो इसलिये कहा गया है –

"हू हरिनो हरि ममरक्षक ए भरोसो जाय नहि।
जे हरि करशे ते मम हितनुं ए विश्वास तजाय नहि ॥"

ऐसा भरोसा रखकर भगवान का भजन करना चाहिए। आज भी भगवान हम सब की रक्षा करेगे।

●

अन्तर कहाँ है ?

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

संस्कृत में एक कहावत है कि ''अति परिचयमाद अवज्ञा'' अर्थात् अधिक मिलना अति परिचय कई बार अनादर का कारण बन जाता है। अमूल्य वस्तु की सहज उपलब्धता उसका मान कर देती है। इसतरह तीर्थ स्थलो के विषय में भी है। मनुष्य हजारो रुपये खर्च करके तीर्थ स्थानो पर जाते है। लेकिन वहाँ पर रहने वाले व्यक्ति तीर्थ का महत्व नही करते है। कारण यह है कि उनके लिये वह तीर्थ स्थान न होकर निवास स्थान हो जाता है।

तीर्थ, अमूल्य वस्तु का सरलता से प्राप्त होना उनके अनादर का कारण बनते है। यह बात संत–महापुरुषो के लिये भी सत्य होती है। यदि सावधान नही रहे तो जिस संत–महात्मा की वाणी के लिये लोग झंखते है। यदि किसी को यह सरलता से मिल जाता है तो उसका महत्व कम समझता है। तथा अपनी अज्ञानता से लाभ से दूर हो जाता है। यह अज्ञानता कभी–कभी दुख का कारण बन जाते है। इसलिये शास्त्रो में कहा गया है कि सत्पुरुषो का समागम हमेशा बना रहे। उसे सावधानी रखना चाहिए। इस बात का हमेशा ध्यान देना चाहिए कि महापुरुषो को स्थिति हमसे अलग होती है। चाहे हम उनके साथ रहे या वे हमारे साथ रहे। क्या चीटी और हाथी ! मैं उनके समान नहीं हो सकता हूँ। इस प्रकार रहने पर कभी अबमांनना नही कर सकते है। यह समझने के लिये एक बात उपयोगी होगी।

एक सद्गृहस्थ थे। उन्हे एक महात्मा के साथ गुरु भाव था। महात्मा की कीर्ति चारो तरफ फैली थी। इस शिष्य का महात्मा के उपर अत्याधिक प्रेम था। गुरु का निवास दूर स्थान पर था। सि कारण उसे प्रतिदिन सत्संग का लाभ नही मिलता था। इस कारण से वह एक पूरे श्रावण मास की कथा वार्ता का लाभ प्राप्त कर सके। उसने संत को अपने घर आने का निमंत्रण दिया। गृहस्थ की श्रद्धा देखकर महात्मा ने आमंत्रण स्वीकार कर लिये। श्रावण मास प्रारम्भ होने से एक दिन पूर्व महात्मा इस गृहस्थ के घर आ गये। सद्गृहस्थ ने भाव से महात्मा का स्वागत अभिवादन करके अपने घर पर लाया। इस सद्गृहस्थ का घर बडा था. इस लिये घर के उपर मंजिल पर महात्माजी के ठहरने की व्यवस्था कर दिया। कथा–वार्ता सत्संग प्रारम्भ हुआ। आठ–दस दिन बीत जाने के बाद महात्माजी अपने कमरे में विराजमान थे। उसी समय उनका शिष्य आकर अपने मन का विचार प्रस्तुत किया।

बह बोलने लगा–गुरु मैं आप को पूरे महीने हमारे घर पर कथा–वार्ता हो इस लिये बुलाया है। आप प्रतिदिन शाम–सुबह कथा–वार्ता का लाभ देते है। हम नीचे रहते है। आप उपरी मंजिल पर रहते है। मुझे लगता है कि हमारे आप में कोई अन्तर नही है। मैं रात्रि में आप के पास शयन कर सकता हूँ। वही आप भी भोजन करते है। मैं भी स्नान करता हूँ। आप भी स्नान करते है। मैं भी पूजा पाठ करता हूँ। आप भी पूजा–पाठ करते है। हममें आप में कोई अन्तर नही है। इस कारण से हम और् आप एक समान ही है।

महात्माजी को लगा कि शिष्य को जो विचार आया है। उसका उत्तरवाणी से देना योग्य नही है। उन्होने कहा, इसका उत्तर मैं कुछ दिन बाद दूँगा। कुछ दिन बीत गये। एक दिन महात्माजी सद्गृहस्थ से बोले कल प्रातः

(पेईज नं. २५)

॥ भक्तिसुधा ॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "साधनारुपी पात्र निर्मल होगा तभी भगवत कृपा का अनुभव होगा"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

सत्संग में अभी तक क्या बात हुई । जतनबा की बात हुइ है । महाराज जनतबा के घर गये थे । जतनबाने महाराज को कार्य सौप दिया । कि आप इस धान को हिलाना और ध्यान देना की यह चिपके भी नही तथा बाहर उबाल खा कर गिरे भी नही । इस लिये ध्यान से चलाते रहियेगा । भगवान के अलावा कही ध्यान से चलाते रहियेगा । भगवान के अलावा कई अति आसक्त नही होना चाहिए । जनतबा बोली हमें अब अधिक देखना नही है । क्योकि ? जब महाराज ने बनाया है तो हमे क्या देखना ? उसी प्रकार हम लोग महाराज के प्रति पूर्ण समर्पित हो जाये तो इस संसार में देखना आवश्यक नही है।

ऐसी अवस्था प्राप्त करने के लिये दो वस्तुए रहना आवश्यक है । एक जीव की तीव्र ईच्छा होनी चाहिए । दूसार 'भगवतकृपा' के सिवाय कुछ प्राप्त नही होता है । हमे ऐसा लगता है कि भगवान की कृपा से सब कुछ मिल सकता है तो साधन और परिश्रम की कहाँ आवश्यकता है ? ऐसे ही मिल जाना चाहिए । लेकिन ऐसा होता नही है । उदाहरण स्वरुप गाय का शुद्ध दूधप्राप्त करना हो तो शुद्ध बर्तन ले जाना पडता है । अशुद्ध पात्र में दूधका उपयोग नही कर सकते है । उसी प्रकार भगवतकृपा प्राप्त करने के लिये साधन रुपी पात्र की आवश्यकता पडती है । इस कारण से लोग देवी-देवताओ की मन्नत करते है । ऐसै नही की धाम में जाने के लिये शुद्ध उपासना हो । उसकी बात है । साधना भी शुद्ध होना चाहिए । इससे हमें यह अनुभव होना चाहिए । कि हम भजन-कीर्तन माला जब-तप करते है । यह सब निर्मल मन से होना चाहिए . अवगुण रहित मन से करे यही शुद्ध साधना कहलाती है । भगवान की कृपा होगी तो मिलेगे लेकिन साधना रुपी पात्र शुद्ध होना चाहिए । इस लिये हमे साधना द्वारा पात्रता प्राप्त करने का प्रयास करते रहना चाहिए ।

हम कहते है कि सब कुछ भगवान की ईच्छा से होता है । इस कारण से कुछ गलत नही होना चाहिए । होना भी नही चाहिए । महाराज ने इतने सारे नियम बनाये है कि जीवन किस तरह व्यतीत करे ? आज्ञा किये है । समझाये भी है । शिक्षापत्री भी बनाये है । तो ऐसा कुछ होता भी नही । कहते सब मेरी ईच्छानुसार होगा । ठीक है महाराजने ऐसा कहा है कि :

मेरी मर्जी के बिना किसी का बाल भी नही टूट सकता है।

लेकिन इसका अर्थ ठीक से समझना पडेगा । हम लोग गलत अर्थ निकालते है । जाने-अनजाने यदि अपने से गलत हो जाता है तो हम लोग दूसरे के उर दोष लगा देते है । कि महाराज की ऐसी इच्छा होगी । लेकिन ऐसा नही होता है । महाराज की ईच्छा से सब होता है । इसका अर्थ यह है कि हम जो करते है उसका परिणाम प्राप्त होता है । इसमें अपनी ईच्छा नही चलती है । भगवान हमें कर्म करने की स्वतंत्रता दिये है । भगवान द्वारा प्रदत्त ज्ञान और शक्ति का हम कैसे उपयोग करते है । यह हमारे हाथ में है । परिणाम क्या मिलेगा यह हमारे हाथ में नही है । वहाँ पर महाराज की ईच्छा चलती है । इस लिये कहा जाता है कि सोच-विचार कर कर्म करना चाहिए । कितना भी अच्छा कर्म करे । लेकिन उस समय आप की मनोस्थिती कैसी

थी । उद्देश्य क्या था ? अन्दर की भावना कैसी थी । स्वार्थ युक्त भावना थी । भगवान आन्तरिक विचार देखते है । उस प्रकार फल देते है । भगवान कर्म फल प्रदाता है ।

यह सब समझने के लिये शास्त्र का अध्ययन आवश्यक है । उच्च स्तर का ज्ञान होना चाहिए . आप परीक्षा देने बैठे हो तब रटा हुआ लिखते है । सुनकर-समझकर बराबर पढने पर दोनो में अन्तर दिखाई देता है । सत्संग में समझकर बाद में प्रयास करना चाहिए । शास्त्रो का मनोमंथन करके गहराई से अध्ययन करना पडता है । हमारे शास्त्र तो ऐसे है कि बार-बार पढने पर नया भाव बनता रहता है । जितना पढे वह कम ही लगता है । संसार की पुस्तक दो बार पढ लेने के बाद तीसरे बार पढने में मन नही लगेगा । और अपना ''वचनामृत'' यह तो ''अध्यात्मशास्त्र'' है । आप इसे जितने बार पढेगे । उतने बार कुछ नवीनता प्राप्त होगी । पढकर उसका पालन करने का प्रयास करना चाहिए । यह मुख्य बात है । भगवत कृपा प्राप्त करने के लिये पूर्ण श्रद्धा के साथ १००% शरणागति स्वीकार करना पडता है । शरणागति प्रथम नियम है । नियमानुसार सब कुछ होता है । सब संविधान होता है । पूरा देश कानून के आधार पर चलता है न ? प्रश्नोतरी के बिना सभी नियमो का पालन करना पडता है ।

इस संसार के जिसने बनाया है । उनके द्वारा प्रस्थापित नियमो का पालन करने में प्रश्न बाचक तथ्य क्यो आ जाते है । भवसागर पार करने के लिये १००% शरणागति स्वीकार करना पडता है । तथा भय में से गुजरना पडता है । भगवान की तरफ असर होने पर बीच में मायारुपी अवरोधआता ही है । माया के साथ लडाई करना पडता ही है । माया प्रतिदिन प्रहार करती है । भगवान तक जाने से पहले रास्ता में गिरा देती है । तो उसके लिये क्या करना चाहिए ? तो मायापति की शरण में जाना चाहिए । तो माया से आसानी से दूर हो सकते है । हम किसी से मिलने के लिये जाते है । वहाँ पर पालतु कुत्ता घर पर हो । वह भौकने लगता है । परिणाम स्वरुप मालिक को बुलाना पडता हो या तो वह कुत्ते को बाँधदेता है । या पकड कर रखता है । तभी हम अन्दर जा सकते है । उसी प्रकार माया-भगावन के सामने खडी रहती है । वह आगे नही जाने देती है । आप भगवान को पुकार लगायेगे तब भगवान बोलेगे यह हमारा भक्त है । कृपया इसे आने दे । इसलिये एक नियम बनाकर १००% सच्चे दिल से निश्चय अवश्य करले । सच्ची श्रद्धा से पूर्ण होकर जायेगे । तो भगवान की कृपा की वर्षा होगी । तथा प्रभु की कृपा बरसती रहती है । बाहर अधिक वर्षा हो रही हो । तथा अपने पात्र में एक बूँद जल न आये तो कारण क्या ? तो दोष अपना ही है । हमने पात्र उलटकर रखा है । वर्षा तो हो रही थी । उसी प्रकार भगवान की कृपा तो बनी ही रहती है । हमे सीधा मार्ग पकडना है । प्रत्येक दिन समय निकाल कर देखना चाहिए । महाराज की आज्ञा का पालन हम नहीं कर पाये है ।

•

आस्था

– सांख्ययोगी कोकिला (सुरेन्द्रनगर)

इस संसार में कई मनुष्यो को ऐसा लगता है कि इस संसार में ईश्वर जैसा कुछ भी नही होता है । वे वास्तव में विचार करते है कि ईश्वर है कि नही ? यदि ईस्वर है तो दिखाई क्यो नही देते है ? ऐसा प्रश्न कई लोगो के मन में पैदा होता है कि ईश्वर है कि नही ? इसका उत्तर प्राप्त करने के लिये । इस सृष्टि पर नजर डालने पर कई आश्चर्यजनक और अलौकिक अनुभव मिलते है ।

इस मानव शरीर का सर्जक कौन है ? आत्मा प्रदाता कौन है ? मृत्यु के बाद आत्मा का क्या होता है ? यदि हम बाजार में कलर लेने जाते है तो पचास प्रतिशत रंग हल्के दिखाई देते है । तो पक्का कलर कौन बनाता है ? मोर का, कौवे का, तोते का, गोरैया का रंग किसने बनाया होगा ? भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुओ के रचयिता कौन होगा ? मिट्टी के घडे को बनाने वाला कुम्भकार दिखाई देता है । इन तारा मंडल को किसने

बनाया है ? इन तारो को स्थिर रखने वाला कौन है ? प्रकृति का करिश्मा तो देखे । सूर्य को हमसे कितना दूर रखना चाहिए । उतने दूर पर रखे है । यदि नजदीक रखे होते तो हम जल जाते ।

ब्लड बैंक के बारे में हम लोग तो जानते ही है । दूधके रख-रखाव के लिये कितना खर्च करना पडता है । इस लिये रक्त को बनाने वाला कौन होगा ? यदि यह वस्तु है तो उसको बनाने वाला तो होना ही चाहिए ? तब यह करना पडता है कि यह वस्तु नबाने वाले भगवान ही है । प्रश्न यह उठता है बनाने वाले भगवान है तो ईश्वर दिखाई क्यो नही देते है ? पुराणो में ईश्वर के बारे में कहा गया है कि सर्व स्थान कण-कण में ईश्वर निवास करते है । तो भी ईश्वर क्यो नही दिखाई देते है ? दूधमें मक्खन रहता है । लेकिन दिखाई नही देता है । मिठाई मे चीनी होती है लेकिन दिखाई नही देती है । खाने पर मीठेपन का अनुभव मिलता है । आप गीता पढे होतो । गीता में अर्जुन अपने सारथी श्रीकृष्ण से कहते है कि रथ दोनो सेना के मध्य ले चले । क्रिकेटर जिस तरह पिच का निरीक्षण करता है । उसी प्रकार अर्जुन शत्रु के बल का निरीक्षण करना चाहते है । उन्होने सेना का निरीक्षण भी किया । अपने सगे रिश्तेदारो को देखकर उनका मन युद्ध से हट गया था । भगवानने अध्यात्मिक उपदेश दिये । लेकिन उन पर प्रभाव नही पडा था । अन्ततः श्रीकृष्ण ने अपना विराट स्वरुप धारण करके बोले अर्जुन हमारे तरफ देखो । अर्जुन उस समय व्याकुल हो गये थे । भगवान अर्जुन से बोले हमे देखने के लिये साधारण आँख काम नही कर पायेगी । भगवान ने उन्हे दिव्य आँख दिये । इसके पश्चात भगवान को अर्जुन देख सके थे ।

किसी भी ईश्वरीय अवतार के पीछे सूर्य अवश्य होते है । यह बताता है कि वह ईश्वर के अंश है । सूर्य के सामने देखने पर हमारी आँखे बंद हो जाती है । तो जहाँ पर हजारो सूर्य का प्रकाश हो वैसे तेज धारण करने वाले परब्रह्म परमात्मा दिव्य और साकार को देखने के लिये हमारी आँख कहाँ सहन कर सकती है । इस कारण से परमपिता परमेश्र को यह स्थूल आँख देख नही सकती है । पात्र व्यक्ति अन्दर से अनुभव कर सकता है । हमारे शरीर में हृदय को सुरक्षित रखने के लिये पसलियाँ बनाये है । जिससे हृदय को सुरक्षा मिलती है । ईश्वर ने कैसी सुरक्षा प्रदान किये है । सूर्य, चन्द्र, तारे किसके प्रताप से चमकते है ।

श्रीजी महाराज गढडा प्रथम प्रकरण के २७ वचनामृत में कहते है कि ''इस पृथ्वी को जिसने स्थिर रखा है । वही चला भी सकता है । तारा मंडल जिसके नियंत्रण में है । जिसके बरसाने से बादल बरसते है । जिसकी आज्ञा से चन्द्र और सूरज उगते और अस्त होते है । चन्द्रमां अपनी कलाये पूर्ण करता है । सभी लोग मर्यादा में रहते है । जल-बिन्दु में से मनुष्य पैदा होता है । उसे हाथ, पैर, नाक, कान आदि दश इन्द्रियो होती है । तथा आकाश में जल भर रखे है । उसमें गर्जा और बिजली चमकती है । ऐसा अनंत ऐश्वर्य है । भगवान की कृपा से सब कुछ होता है । भगवान इस कारण से साकार है । ऐसा मालूम पडता है । हम जो मिले है । वह भगावन के कृपा से होता है ।

कई लोग ऐसा बोलते है कि ईश्वर जैसा कुछ है ही नही ? उन लोगो से यह कहना है कि बकरे का मल एक समान बाहर आता है । उसी प्रकार जुगुन के पेट में बिजली चमकती है तो वहाँ पर किसने जनरेटर वायरिंग, स्वीच लगाया होगा ? कोई खोज नही पाया है । नारियल के ऊँचे पेड पर लगे नारियल के फल का पोषण कौन करता है । उसमें अमृत समान जल कौन भरता है । चींटी की संरचना किसने की होगी ? नीम के वृक्ष की डाल, लता, पते ये सभी कडवे होते है । लेकिन जब निबौरी पकती है तो उसमें मी ठापन कहाँ से आता है ? सुखा-हरा चारा खाकर गाय हमें सफेद दूधदेती है । वह चारा कैसे सफेद रंग में बदलता है । प्राणी के शरीर में सूई चुभ जाती है तो रक्तस्त्राव होता है । तो मध्य में सफेद

दूधकी व्यवस्था किसने किया ? यह सब देखते हुए भगवान की महानता समझ में आती है । सभी के भगवान रक्षक है । इस लिये आस्तिक भाव रखकर ध्यान करना चाहिए । मैं आराध्य देव का भक्त हूँ । और भगवान हमारे साथ है । इसे हमें विस्मृत नही करना चाहिए । सुख के मूल केवल भगवान है । ऐसी आस्था रखकर भगवान की भक्ति करके जीवन को भगवान के प्रति समर्पित करना चाहिए ।

●

धर्मकुल

– कुन्दनबा नागदान सोनी (राजुलावाले)

जय स्वामिनारायण इस संसार में कई अज्ञानी लोग ऐसा कहते है कि 'धर्म का पालन वह धर्मकुल'' अब इसे क्या कहा जा सकता है ? यदि अज्ञानी है वो वह क्षमा का पात्र है । उसे अच्छी तरह से समझना आवश्यक है कि कुल किसे कहा जाता है । कुल अर्थात खानदान प्रत्येक खानदान को एक सरनेम होती है । जो उसके पूर्वजो के नाम से शुरु होती है । जैसे श्रीकृष्ण के वारस यदुवंशी लोग है । श्रीरामचंद्र के वंशज रघुकुल के रुप में जाने जाते है । इसी प्रकार हम सभी जातने हे कि श्री धर्मदेव के पुत्रो को धर्मकुल के रुप में जानते है । धर्मदेव के तीन पुत्रो में से सबसे बडे रामप्रतापजी महाराज, मध्यवाले अपने आराध्यदेव सर्वोपरी श्री घनश्याम महाराज औऱ छोटे श्री ईच्छारामजी महाराज थे । बडे भाई तथा छोटे भाई का विवाह हुआ था । लेकिन अपने घनश्याम महाराज विवाह नही किये थे । अपने महाराज शेष दो भाईओ के एक-एक लडके को दत्तक (गोद) लिये थे । अपने सम्प्रदाय की दो गद्दी स्थापित करके आचार्य पद दिये । इनका परिवार वे धर्मदादा के नाम से धर्मकुल कहा जाता है । इतने सरल भाषा में यदि समझ नही आता है तो सीधे भक्त भ्रम की दशा में आये । उससे पहले स्पष्टता अति आवश्यकत है । जो धर्म का पालन करता है उसे धार्मिक अवश्य कहा जाता है । लेकिन उसे धर्मकुल नही कहा जाता है । उपरोक्त कुल एक धरोहर है । खानदान है । धर्म तो कई होते है । कोई पारसी तो कोई जैन अपने नियमानुसार लोग धर्म का पालन करते है । उन्हे हम धार्मिक कहते है । उन्हे आराध्यदेव का पुत्र नही कहते है । धर्म का पालन तो पूरी सृष्टि करता है । पूरी सृष्टि को भगवान का पुत्र थोडे ही कहते है । वह भक्त या धार्मिक कहा जाता है । लेकिन जो कुल होता है । खानदान होता है । वह कई पीढीओ में भी नही बदलता है । इसी प्रकार घनश्याम महाप्रभु के पिताश्री के नाम से तीनो भाईयो के परिवार को धर्मकुल कहा जाता है । यह इसकी वंश परम्परा की थाती (धरोहर) है । खानदान है । यह स्पष्ट रुप से समझना आवश्यक है । क्योंकि यही परम सत्य है ।

●

"शायं काल में केवल प्रभु का भजन करे"

– लाभुबेन मनुभाई पटेल (कुंडाल, ता. कडी)

शायंकाल का समय अति अशुभ होता है । हमारे भारतीय शास्त्र कहते है । संध्या के समय कभी शयन नही करना चाहिए । संध्या के समय बुद्धि के मालिक सूर्य देव अस्त हो जाते हैं । तथा मन के देव चन्द्र का आगमन नही हुआ रहता है । इस बेला में श्री नारायण का ध्यान, भजन, आऱती, कीर्तन, कथा-वार्ता भगवान सम्बन्धी सभी क्रिया करना चाहिए । व्यवहारिक कोई भी कार्य नही करना चाहिए ।

भगवान श्री स्वामिनारायण ने दैत्य माता दिति के उपर से शिक्षापत्री में लिखे है :

भगवन्मंदिरं सर्वै: सायं गन्तव्यभन्वहम् ॥
नाम संकीर्तन कार्य, तत्रोच्यै: राधिकापते: ॥६४॥

प्रभुने आज्ञा किया है कि प्रत्येक भक्त को स्वामिनारायण के आश्रित के लिये ही नही लिखा गया है । इस पर विशेष दबाव देकर यह बात कही गयी है । भगवन्मंदिरं सर्वै: प्रत्येक मनुष्य को अपने आराध्यदेव

की मंदिर में जाकर संध्या काल में परमेश्वर का नाम उच्च स्वर में लेना चाहिए । आरती-वंदन, धुन-स्त्रोत प्रार्थना ईत्यादि करना चाहिए । भगवान श्री स्वामिनारायण का मन तो अति विशाल था । इस लिये इस श्लोक में मानव वंश का कल्याण हो इस तरह का उल्लेख किये है । तथा आज्ञा भी दिये है । संध्या के समय भजन इत्यादि न करने के कारण दिति को कैसा विपरीत परिणाम मिला वह शास्त्र विदित है । संध्या शयन से कैकेयी को क्या परिणाम मिला सभी जानते है । जो रामायण में वर्णित है।

आज कल मनुष्य संध्या के समय बाग-बगीचे में टहलने जाते है । क्लबो में शतरंज खेलने जाते है । खाने-पीने का आनंद लेने जाते है । स्वास्थय लाभ के लिये बाग-बगीचे में जाना लाभ दायक है । लेकिन संध्या के समय परमात्मा का मंदिर छोडकर हवा खाने जाना । फिर पूरी जिन्दगी हवा खाना बंद हो जाता है । हम सभी को ज्ञात है कि महात्मा गांधी भी सायंकाल भजन-कीर्तन समूह प्रार्थना गीता पाठ करते थे । और गाते थे ।

"रघुपति राधव राजाराम,
पतित पावन सीताराम, ॥
ईश्वर अल्ला तेरो नाम,
सबको सम्मति दे भगवान ॥"

यह प्रसिद्ध रामधुन गाते थे । तथा सभी को गाने के लिये प्रेरित करते थे । हमें अपना सोचकर संध्या काल में उत्साह पूर्वक समय का उपयोग करके भजन-कीर्तन-समूह गान, स्त्रोत पाठ, शुभ भक्ति मंदिर जैसे पवित्र स्थल पर जाकर करना चाहिए । जिससे जीवन पवित्र हो जाता है।

(अनु. पेईज नं. २० से आगे)

आप हमारे साथ चलना तब आप के प्रश्न का उत्तर दे देगे । महात्मा स्नान पूजा कर लिये । तथा शिष्य भी दैनिक क्रिया से निवृत हो गया । महात्माजी बोले अब हमारे साथ चलो । महात्माजी आगे-आगे शिष्य पीछे-पीछे चलने लगा । गाँव से बाहर आ गये । फिर भी महात्माजी आगे बढते जा रहे थे । लगभग १० से १२ किलोमीटर आगे निकल गये । अब शिष्य को बर्दास्त नही हुआ । वह गुरु से बोला कि हम लोग काफी दूर तक आ गये है । आपने उत्तर नही दिया है । महात्माजी बोले कि मैं तुम्हे उत्तर दे रहा हूँ । आप भी बंगला में रहते है । मैं निकल गया हूँ । इस लिये तुम भी आगे चलते रहो । पीछे नही मुड़ना है क्योकि हम दोनो एक समान है।

अब शिष्य से नही रहा गया । वह बोलेने लगा । नही-नही गुरुदेव, मेरा बंगला, सम्पत्ति, परिवार ये सब हम कैसे छोड दे । गुरु बोले क्यो नही आ सकते हो ? इसमें क्या रोक है ? हम दोनो तो एक समान है । शिष्य को यह बात समझ में आ गयी । वह महात्मा से क्षमा माँगा । वह अपने घर गया । महात्माजी अपने स्थान पर चले गये ।

महान व्यक्तियों में जो महानता होती है । वह सामान्य मनुष्य समझ नही पाता है । ये विरले ही समझ सकते है । जब भगवान मानव अवतार मे विचरण करते है । या महापुरुषो के साथ से मानव भाव दूर करना होता है । ऐसा ज्ञान मिल जाने पर किसी साधन की आवश्यकता नही होती है । धीरे-धीरे भगवान की माया से पार हो सकते है।

ऐसा अमूल्य अवसर हम सबको मिला है । धीरे-धीरे सत्संग की प्राप्ति होती है । स्वामिनारायण भगवान मिले है । तो यह मानव जनम भजन करके सार्थक कर लेना चाहिए।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर धनुर्मास धुन महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. पूज्य महंत शास्त्री स्वामी श्री निर्गुणदासजी के प्रेरणा और मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में ता. १६ दिसम्बर से १४ जनवरी तक पवित्र धनुर्मास में प्रातः से सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धुन का अलौकिक प्रबन्धप्रसादी के भवन में हुआ था। संत-हरिभक्त कोरोना महामारी के कारण सरकार के निर्देशानुसार परस्पर में अन्तर रखकर भगवान श्रीहरि का स्मरण करते थे। प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष कोरोना होने के बाद भी भक्तो की श्रद्धा में कोई कमी नही हुई। पूरे महीने धुन के यजमान प्रत्येक वर्ष की तरह अधिक थे। दैनिक धुन हरिभक्तो द्वारा की गई। मासिक धुन लिखवाने वाले को सुंदर गरम शाल और प्रसाद दिया गया था। दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में ठंड बढ जाने के पश्चात भी श्रद्धालु प्रेमी भक्त समय पर धुन का लाभ लेना नही छोडते थे। धुन में प्रसाद की अनेक सेवा में संत, पार्षद और हरिभक्तोने सुंदर सेवा देकर ठाकुरजी की कृपा का पात्र बने थे।(चंपकभाई दरबार)

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव आदि देवो की थाल-रसोई की सूची

थाल का विवरण	थाल	रसोई
चुरमाकालड्डू	रु. २,०००/-	रु. १०,०००/-
मगशका लड्डू	रु. २,०००/-	रु. १०,०००/-
बूंदी के लड्डू	रु. २,०००/-	रु. १०,०००/-
मोतीचूर के लड्डू	रु. २,०००/-	रु. १०,०००/-
मोहनथाल	रु. २,०००/-	रु. १०,०००/-
मगश-पुरी	रु. २,५००/-	रु. १५,०००/-
मालपूवा	रु. २,५००/-	रु. १५,०००/-
खीरपुरी	रु. २,५००/-	रु. १५,०००/-
अडदिया का थाल	रु. २,५००/-	रु. १५,०००/-
साटा का थाल	रु. २,५००/-	रु. १५,०००/-
शीखंड पुरी	रु. ३,५००/-	रु. २०,०००/-
ड्रायफ्रुट हलवा	रु. ३,५००/-	रु. २०,०००/-
बासुंदी पुरी	रु. ३,५००/-	रु. २०,०००/-
खीर-मालपुवा	रु. ३,५००/-	रु. २०,०००/-
गुलाब जामुन	रु. ४,०००/-	रु. २०,०००/-
जलेबी	रु. ४,०००/-	रु. २०,०००/-
मैसुब	रु. ४,०००/-	रु. २०,०००/-
काजू-बदाम मैसुब	रु. ५,०००/-	रु. २०,०००/-
रस पुरी	रु. ५,०००/-	रु. २०,०००/-
सत्तरधाम का थाल	रु. ३,०००/-	
स्थायी सुरक्षित थाल		रु. १०,०००/-
स्थायी सुरक्षित थाल (शाम)		रु. ५,००१/-

ठाकोरजी को शायं का थाल रु. ५००/-

Mo. : 8238001666

श्री स्वामिनारायण मासिक के सभी सदस्यो के लिये सूचना

विशेष : जो फार्म की सूचना भेज दिये है। उन्हे पुनः नही भेजना है। फोन भी नही करना है। जिसने सूचना (विवरण) नही भेजा है कृपया शीघ्रातिशीघ्र भेजने का कष्ट करे। यह आप से विशेष अनुरोध है।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(१) नारणपुरा मंदिर में धनुर्मास का दर्शन । (२) गांधीनगर सेक्टर-२ मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक तथा अन्नकूट दर्शन । (३) मथुरा मंदिर में ठाकुरजी अन्नकूट दर्शन, बाल भोजन तथा तुलसी विवाह करते हुए हरिभक्त ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2021-2023 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2023

(१) लोस एन्जलस (अमेरिका) मंदिर के २० वाँ पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अन्नकूट दर्शन । (२) ओकलेण्ड (न्युजीलेन्ड) मंदिर में शाकोत्सव का दर्शन । (३) करांची (पाकिस्तान) अपने मंदिर के युवक टीशर्ट पर तिलक, चाँदला के प्रतीक के साथ अधिक महत्व की मैच में चैम्पियन होकर आये । उनकी सामूहिक तसवीर के लिये उन लोगो को प.पू. बड़े महाराजश्री ने शुभेच्छा दिया (चित्र हरिश लाखा) । (४) सीनेमिन्सन (अमेरिका) श्री स्वामिनारायण मंदिर की तरफ से कोरोना काल में भोजन के लिये यूटीलिटी किट का वितरण किये थे ।

श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय के देश-विदेश के हरिभक्तो के आग्रह पर उनकी सुविधा के लिये आनलाईन डोनेशन कालुपुर मंदिर की आफिसियल बेवसाइट पर नीचे दिये लिंक द्वारा कर सकते है ।

htpp://www.swaminarayan.in/donation

Praful Khansani